मंगल कामना सिर्फ पुरुष के लिए!

रश्मि स्वरूप जौहरी

कुछ दिन पहले मेरी एक सहेली की पैर की उंगली की हड्डी टूट गई। उसी में वह बिछुआ पहने थी। डाक्टर के कहने पर जैसे ही वह बिछुआ उतारने लगी उसके पास खड़ी उसकी सास बोल पड़ी, "अरे बिछुआ न उतारो, अपशगुन होता है।"

एक बार हमारे घर काम करने वाली महरी की लड़की के गले में दाने हो गए। वह स्टील की चेन पहने थी जिससे दाने छिल-छिल जाते थे। जब लड़की ने चेन उतारनी चाही तो मां ने टोका, "अरे अभागिन, भाई का क्यों बुरा करे है।"

बचपन से ही लड़की यह सब सुनने की आदी हो जाती है।

"अरी, गले में कुछ पहन लो, नंगा गला बाप चाचा का बुरा करता है।"

"क्यों भाई की जान के पीछे है। हाथ में दो चूड़ी डाल ले।"

"अरे, मंगलसूत्र उतार दिया? क्या खसम खाने का इरादा है?"

कीमती पुरुष

यह ताने जाने-अनजाने उसे समझा देते हैं कि उसकी अपनी कोई कीमत नहीं है। उसे पिता, भाई और पति के मंगल के लिए ही खास कुछ करना है। उसके भाई को ऐसा कुछ नहीं करना पड़ता। वह स्वयं को अपने भाई से नीचा समझने लगती है।

बचपन से ही लड़की देखती है कि मां सुहाग चिन्ह धारण करती है। पिता की दीर्घायु के लिए व्रत उपवास करती है। पिता यानि पति अपनी पत्नी के लिए ऐसा कुछ नहीं करता। लड़की जान जाती है कि घर के पुरुषों का दर्जा स्त्रियों से ऊंचा है। एक लड़की से मां, बहन या भाभी की मंगल कामना के लिए कुछ करने को नहीं कहा जाता है।

सामाजिक बंधन

औरत चाहे कुंवारी हो, सधवा या विधवा, अपनी मर्जी से पहन-ओढ़ नहीं सकती। अगर सुहाग चिन्ह लाभदायक हैं तो पति क्यों नहीं पत्नी के लिए इन्हें धारण करता। पर नहीं, वह तो आजाद प्राणी है। उसके लिए ऐसा कोई सामाजिक रीति रिवाज नहीं है।

कितना भयानक और दर्दनाक होता है जब किसी की चूड़ियां तोड़ी जाती हैं। बिंदी मिटाई जाती है। सूनी मांग, सूना माथा, सूनी कलाई। विधवा के क्लेश का क्या पुरुष अंदाज़ा लगा सकता है? अगर यह सब चिन्ह पहनने सधवा के लिए ज़रूरी न हों तो इन्हें उतारने का सवाल ही नहीं उठता। मानसिक क्लेश और तो न बढ़ता।

मरने के बाद भी रीति रिवाज़ पीछा नहीं छोड़ते। सुहागिन मरे तो उसके भाग्य को सराहा जाता है। चाहे विवाहित जीवन में उसने दुख ही दुख झेले हों, सधवा स्त्री का दाह-संस्कार पूरे साज श्रंगार के साथ धूमधाम से किया जाता है।

लीक पीटना

सुहाग चिन्ह व भाई, पिता और पति की सुरक्षा के लिए गहने पहनने का उनकी लंबी उम्र से कोई संबंध नहीं है। न ही इनके पहनने, न पहनने से कोई अपशगुन होता है। जीवन-मृत्यु जिंदगी की

वास्तविकता है। जिसने जन्म लिया है वह मरेगा भी। जो औरतें सब सुहाग चिन्ह पहनती हैं, पति की लंबी उम्र के लिए व्रत-उपवास करती हैं उनके पति की मृत्यु क्या उनसे पहले कभी नहीं होती?

यह सब रिवाज़ औरत-मर्द में भेदभाव करते हैं। औरतों पर पाबंदी लगाते हैं कि वे अपनी मर्जी से सज-संवर भी न सकें। औरतें यह कभी न सोचें कि मर्दों के मुकाबले उनका जीवन कम कीमत रखता है। □